'दिल मेरा मुझसे कहे' सब्र कर

प्राप्तिः 22.11.25
स्वीकृतः 10.12.25

82

डॉ. नागेंद्र प्रसाद सिंह
सहायक आचार्य (हिंदी विभाग)
धर्म समाज कॉलेज,अलीगढ़
राजा महेन्द्र प्रताप सिंह यूनिवर्सिटी अलीगढ़
ईमेलः*nagendrasingh9208@gmail.com*

सारांश

प्रो. सैयद अली जाफर का काव्य संग्रह 'दिल मेरा मुझसे कहे' अभी–अभी प्रकाशित हुआ है। हिंदी साहित्य में बहुत कम ऐसे कवि हुए हैं जो 'स्वान्तः सुखाय' से प्रेरित रचना कर रहे है। उन्ही में कवि हैं एस.ए.जाफर जो 'तौकीर सा' के नाम से अपनी भावनाओं को काव्य रूपी सौंदर्य प्रदान करते है। उन्होने लोकप्रियता की चाह में कविता नही की है, बल्कि अपने अध्यापन कार्य से बचे समय में अपने विभिन्न एहसासों को कविता के माध्यम से बयां किया। उनकी कविताओं से गुजरते हुए आप बिहारी को याद किए बिना नही रह पांएगे।

बिहारी लाल और 'तौकिर सा' की कविताओं में कई समानताएं आपको मिल जांएगी। बिहारी ने अपनी पूरी कविता दोहा में की है तो सैयद ने अपने इस काव्यसंग्रह में दो पंक्तियों की सुक्तियों में कविता की है। दोनों की रचनायें मुक्तक में है। सैयद जाफर 'तौकीर सा' की कविताओं में प्यार, जूनून, जिजीविषा, ईश्वर और सूफी दर्शन है, जबकि बिहारी लाल की कविताएं अपने समय के दोहा शैली की उत्कृष्ट उदाहरण हैं।

मुख्य शब्द *जूनून, प्यार, सौन्दर्य*

कवि अपनी एक सुक्ति में आत्मा से कहता है कि हे आत्मा तू यहाँ से चली जा यहाँ मातम (दुःख) के सिवा कुछ नहीं मिलेगा। इस कविता में सांसरिक दुनिया के मोह में फसे हुए इसांन की उलझनों को स्पष्ट करने की कोशिश की गई। एक सुक्ति में कवि ने बताया है कि इंसान चालाकियों में खुशी ढूंढता है जबकी वास्तव में नादानियों में सुकून है। कवि ने जिंदगी को बेवफा तो मौत को महबूबा कहा है। सैयद के यहाँ सौंदर्य वर्णन –

'खूबसूरती टपकती थी चेहरे पर नूर था,
वो आईना नहीं था वो तेरा जुहूर था।[1]

सैयद ने जिजीविषा पर, सादगी पर, अधूरी ख्वाईश पर, सच और झूठ के महत्व को रेखांकित करते

https://doi.org/10.31995/shodhmanthan.2025.v16i04.82

हुए, कई सुक्तियाँ लिखी है। उन्होने अपनी एक सुक्ति में शहर में रहने वालों कों मुर्दा कहा है –

'मुर्दे बहोत से दौड़ रहे थे इधर उधर,
पूछा जो एक से तो कहा आ गए श्हर।[2]

सैयद ने दुनिया को एक हसीन ख्वाब कहा है, वे अपनी सुक्तियों में अदम्य जिजीविषा के पक्षकार हैं। पापी लोगों पर कवि तंज करते हुए कहता है –

'शाह किस मुँह से जाओगे काबा,
तुमने अपनों की जर जमीं दाबा।[3]

सैयद के यहाँ इश्क, इश्क है। मतलबी प्यार को इश्क नाम देने से उन्हें चिढ़ है। प्यार में तड़प को कवि ने यूँ परिभाषित किया है –

'मैं जानता हूँ के तू बेवफा मगर फिर भी,
तेरे लिए, जो मंरू सौ बरस बहोत कम है।[4]

एक सुक्ति में गौतम बुद्ध के बचपन का वाकया याद हो आया। जिसमें उन्होनें अपने चचेरे भाई देवदत्त द्वारा तीर से मारे गए हंस को बचाया था। हंस किसका है, इस पर निर्यण हुआ था कि मारने वाले से बचाने वाले का किसी पर अधिक अधिकार होता है –

जख्मी थी आ गिरी मेरे आँगन में फाखता
दरवाजे पर खड़ा था शिकारी लिए छुरा।[5]

कवि वर्तमान समय की बदलती हुई मनोवृत्ति और स्वार्थ को प्राथमिकता देने की प्र्रथा को खूब समझता है। इसलिए वह कई जगह लिखता है कि मैं उसको इंसान कैसे मानू, जिसमें इंसानी गुण ही नही है। दुनियावी धंधे में धाख जमाने वालो पर कवि बेबाकी से टिप्पणी की है–

'नवाबी उतनी कर जाफर रियासत जितनी बाकी है
चमक से तू निकल कर देख दुनियां कितनी खाकी है।[6]

इस काव्य संग्रह में कई ऐसी सुक्तियाँ हैं जो इंसान को झेकझोर देती हैं। इन सुक्तियाँ में इंसानियत सर्वोपरि है उसका घमंड झूठा है–

'वालिद की जात से बड़ा कोई हुआ नही,
बच्चों के हक में मांगी न हो वो दुआ नही।[7]

कवि के यहाँ समर्पण भाव है, उन्होने मित्रता के महत्व को रेखांकित किया है। जीवन में माता–पिता के स्नेह को नकारा नही जा सकता। उनके स्नेह के बिना किसी भी इंसान का कोई वजूद नही है–

'ये जिंदगी नही है किसी की कमाई है
अब्बा का प्यार इसमें तो अम्मा समाई है।[8]

प्यार में व्यक्तिगत सम्मान कुछ नही होता, कवि के यहाँ इंतजार को ही इश्क का बड़ा रूप बताया गया है। कवि हंसने–हँसाने का पक्षधर है, वह बड़ी मासूमियत से कहता है –

रो कर तौहीन मत करो गम की
मुझको देखो मैं हा रहा कितना।[9]

कवि ने अपनी कई सुक्तियों में हमदर्द की शक्ल में अपने आसपास घूम रहे निहायत बेईमान इंसानों को यों चिन्हित किया है –

अपनी मुसीबतों का वही ले गया मजा
कहता जो था के बात कोई हो तो बताना।[10]

कवि ने अपने इस काव्य संग्रह में गरीबी के दर्द को भी बंया किया है। एक जगह वह कहता है कि नरक मरने के बाद नही, इसी जीवन में भोगना पड़ता है। एक दूसरी जगह वह कहता है कि गम में इतना रोया के मेरी आंखे ही बह गई अब मुझे कुछ भी नही दिखाई देता। एक सुक्ति में रोटी के लिए जद्ोजहद करता एक चोर दिखाया है–

कहर बरपा हुआ कि चोर इक पकड़ा गया,
तलाशी ली गई उसकी तो एक रोटी मिली।[11]

कवि ने एक सुक्ति में कहा है कि मौत सुन्नत है, जब मरना ही है तो कतरे में क्यों मरू एक सुक्ति में कवि स्वप्न में मर जाता है, एक में बताता है कि जब दिल की बात हो रही होती है तो दिमाग जल उठता है। वह आगे लिखता है–

'हो जाऊँ गर आजाद मैं इस दिल की कैद से,
उनको भी जा मिलूं जिसे दिल चाहता नही।[12]

कवि ने कवि ने स्पष्ट रूप से कहा है कि इंसान को अपनी शक्ति, पद का घमंड नही करना चाहिए क्योंकि जीवन में इतने मसले हैं जिसे हल कर पाना इंसान की वश की बात नहीं। कवि ने लिखा है–

'मर जाते तो आ जाता मजा यार मेरे दोस्त
देखा है हमनें ख्वााब में पुरखे मजे में हैं।[13]

कवि ने अकेले पन को एक आंनद का विषय बताया है। उन्होने लोगो में बड़ी शिद्दत से काम किया है और इस कार्य से मिले स्नेह से कवि अभिभूत भी खूब हुआ कि उसके न रहने पर लोग उसे याद करेंगे। यह भ्रम हर उस इंसान को है जो इस दुनियावी बधंन को जकड़कर पकड़कर रखा है। कवि लिखता है –

'सोचा था कब्रगाह पर मेले लगेंगे रोज
मरते ही लोग गायब हुए जैसे सर से सींग।[14]

कवि ने प्यार ढूंढने की कोशिश करने वालों को पहले इंसान बनने की नसीहत देता है। बिना इंसान बने किसी इंसान से मिल पाना नामुमकिन है। कवि ने लिखा है –

हवस गर न होती तो इंसान होता
सीरत पर कोई मेहरबान होता।
इज्जत भी होती शोहरत भी होती
दुश्मन भी अपना निगहबान होता।[15]

https://doi.org/10.31995/shodhmanthan.2025.v16i04.82

कवि ने आत्महत्या करने वालों को कायर, डरपोक, बुजदिल कहा है। प्यार ही मानवता का मूल उत्स है। इसी को कवि ने शब्दों में यूँ बंया किया है –

'प्यार वो लफ्ज है जिसमें है समाई दुनियां,
ये अगर मिट गया दुनियां को फना तुम समझो।[16]

कवि ने अपने समय के स्वार्थी लोगो से सदैव सतर्क रहने पर जोर देता है और किसी को परखने का तो इनके यहाँ मनाही है। कवि ने स्पष्ट कहा है कि स्वार्थी मित्रों की भलाई में यदि किसी की जॉन भी चली जाए तो भी इनपर कोई फर्क नही पड़ेगा –

आह के साथ मेरा दम निकल जाए तो फिर
वाह वाह के सिवा दुनियां में नही कुछ भी धरा।[17]

कवि ने एक जगह लिखा है कि अगर किसी को कोई बड़ा पद मिल जाए तो दुनियाभर के लोग यहाँ तक कि उसका दुश्मन भी उसे अपना मित्र बताते नही थकता। कवि अपने काम से काम रखने में विश्वास रखता है फालतू की चीजों पर बहस करके अपना समय खराब नही करना चाहता वह लिखता है–

उनको चुभती है बाते अब मेरी,
लाओ होटों को अपने सिलवा लूँ।[18]

कवि किसी भी हाल में या यूँ कहूं हर हाल में जीवन का साथ छोड़ने को कहता है। साथ ही उन तमाम लोगों से दो हाथ करने को भी तैयार है, जिन्हे लगता है कि वे खुदा है।

जिदगी मेरी एक पल की थी,
तेरी औकात भी तो कल की थी,
तूने बातें कहीं जो उसके लिए,
वो तेरी बात बहुत हल्की थी।[19]

कवि ने खुशी की इजहार करने वाली हंसी को नादान कहा है यही हसी दुनिया के तमाम दुःखो को अपने में छुपायें बैठी है –

'मेरी मुस्कान ने रक्खा है भरम खुश हूँ मैं,
मर गया दिल में किसी को नही मालूम है ये।[20]

कवि संघर्षशील लोगो के साथ है, वह बहुत अधिक कठनाई में जी रहे लोगों का मुक्तकंठ स्वर से प्रशंसा भी करता है। वहीं आलसी, आराम पसंद लोगो को देखकर तरस खाते हुए, कहता है –

'मीठे पानी की मछलियां हैं ये,
कैसे खेलेगी खारे पानी में,
इनको रहने दो ठंडे कमरों में,
आओ चलते है बयाबानी में।[21]

किसी ने कहा है जब रहने वाले को सब्र आ जाए तो सताने वाले का मुहँ देखते बनता है कवि के

यहां इस विषय पर भी कई सुक्तियाँ मिल जाएंगी। जहाँ वह तमाम दुःख, दर्द,पीड़ा को मुस्कुराते हुए सहने और उस दर्द के साथ जीने का मजा लेता हुआ दिखाया है –

'वक्त तुझको नजर नही आए,जख्म दिल पर लगे हुए मेरे,
तूने ही तो उकेरा था इनको देखो कैसे सजा लिए हमनें।[22]

वैसे तो कवि ने अपने इस पूरे काव्य संग्रह में ही जिजीविषा की शान में कसीदे पढ़े है। वह जीवन के सभी नाटक को बड़े धैर्य से देखने का पक्षधर है। वह यह भी देखना चाहता है कि आगे क्या होगा, इसमे उसकी जीवटता स्पष्ट होती है। फिर भी वह किसी–किसी सुक्ति में अल्लाह से गुजारिश करता है कि उसे अब दुबारा इस फरेबी दुनिया में मत भेजना–

'अल्लाह से मांगोगे क्या तुम जा तो रहे हो,
हरगिज ना म्रंना ये जमी फिर से दुबारा।[23]

कवि जब अपने समय समाज पर विचार करता है तो वह हैरान रह जाता है कि क्या जमाना आ गया है। लोग अब तमीज,सलीका जैसी चीजों को भूले जा रहे है। आजकल बदत्तमीजी ही तमीज है–

'वाह क्या बात जमाने की भी अजीब हुई
जिसको कहते थे ऊजट–पन वो अब तमीज हुई।[24]

सैयद अली जाफर ने 'दिल मेरा मुझसे कहे' को मुक्तक शैली में लिखी है। इसमें उन्होने मानवजीवन के विभिन्न पहलुओं पर अपनी मार्मिक टिप्पणी की है कवि ईश्वर,प्रेम,वफा,दुःख,दर्द,इंतजार के सहारे अपने सूफी दर्शन से पाठकों का ध्यान आकर्षित करने में सफल है। कवि के पूरे काव्य संग्रह का उत्स इंतजार को प्राथमिकता देना है। यहाँ मरने की छटपटाहट नही है, सौ साल और इंतजार करने की तमन्ना है–

'मौत होने पर अगर आओ तो मर जाऊँ अभी'
सौ बरस और जियूं कह दो गर आंऊगा कभी।[25]

संदर्भ

1. सा जाफर तौकीर सा,"दिल मेरा मुझसे कहे",प्रकाशक अभिनोबोमोन, कोलकाता प्रकाशन वर्ष सितम्बर 2024, पृ० सं०–**11**
2. सा जाफर तौकीर सा, "दिल मेरा मुझसे कहे",प्रकाशक अभिनोबोमोन, कोलकाता प्रकाशन वर्ष सितम्बर 2024, पृ० सं०–**22**
3. सा जाफर तौकीर सा, "दिल मेरा मुझसे कहे",प्रकाशक अभिनोबोमोन, कोलकाता प्रकाशन वर्ष सितम्बर 2024, पृ० सं०–**28**
4. सा जाफर तौकीर सा, "दिल मेरा मुझसे कहे",प्रकाशक अभिनोबोमोन, कोलकाता प्रकाशन वर्ष सितम्बर 2024, पृ० सं०–**36**
5. सा जाफर तौकीर सा, "दिल मेरा मुझसे कहे",प्रकाशक अभिनोबोमोन, कोलकाता प्रकाशन वर्ष सितम्बर 2024।

https://doi.org/10.31995/shodhmanthan.2025.v16i04.82

6. सा जाफर तौकीर सा, "दिल मेरा मुझसे कहे",प्रकाशक अभिनोबोमोन, कोलकाता प्रकाशन वर्ष सितम्बर 2024, पृ० सं०–**43**
7. सा जाफर तौकीर सा, "दिल मेरा मुझसे कहे",प्रकाशक अभिनोबोमोन, कोलकाता प्रकाशन वर्ष सितम्बर 2024, पृ० सं०–**45**
8. सा जाफर तौकीर सा, "दिल मेरा मुझसे कहे",प्रकाशक अभिनोबोमोन, कोलकाता प्रकाशन वर्ष सितम्बर 2024, पृ० सं०–**68**
9. सा फर तौकीर सा, "दिल मेरा मुझसे कहे",प्रकाशक अभिनोबोमोन, कोलकाता प्रकाशन वर्ष सितम्बर 2024, पृ० सं०–**80**
10. सा जाफर तौकीर सा, "दिल मेरा मुझसे कहे",प्रकाशक अभिनोबोमोन, कोलकाता प्रकाशन वर्ष सितम्बर 2024, पृ० सं०–**96**
11. सा जाफर तौकीर सा, "दिल मेरा मुझसे कहे",प्रकाशक अभिनोबोमोन, कोलकाता प्रकाशन वर्ष सितम्बर 2024, पृ० सं०–**98**
12. सा जाफर तौकीर सा, "दिल मेरा मुझसे कहे",प्रकाशक अभिनोबोमोन, कोलकाता प्रकाशन वर्ष सितम्बर 2024, पृ० सं०–**101**
13. सा जाफर तौकीर सा, "दिल मेरा मुझसे कहे",प्रकाशक अभिनोबोमोन, कोलकाता प्रकाशन वर्ष सितम्बर 2024, पृ० सं०–**107**
14. सा जाफर तौकीर सा, "दिल मेरा मुझसे कहे",प्रकाशक अभिनोबोमोन, कोलकाता प्रकाशन वर्ष सितम्बर 2024, पृ० सं०–**114–**पृ० सं०–**159**
15. सा जाफर तौकीर सा, "दिल मेरा मुझसे कहे",प्रकाशक अभिनोबोमोन, कोलकाता प्रकाशन वर्ष सितम्बर 2024, पृ० सं०–**92**